एकलव्य का प्रकाशन
निर्माण, वाराणसी द्वारा विकसित

सरस्वती नन्दिनी मजुम्दार
कलाः रफिया बानो

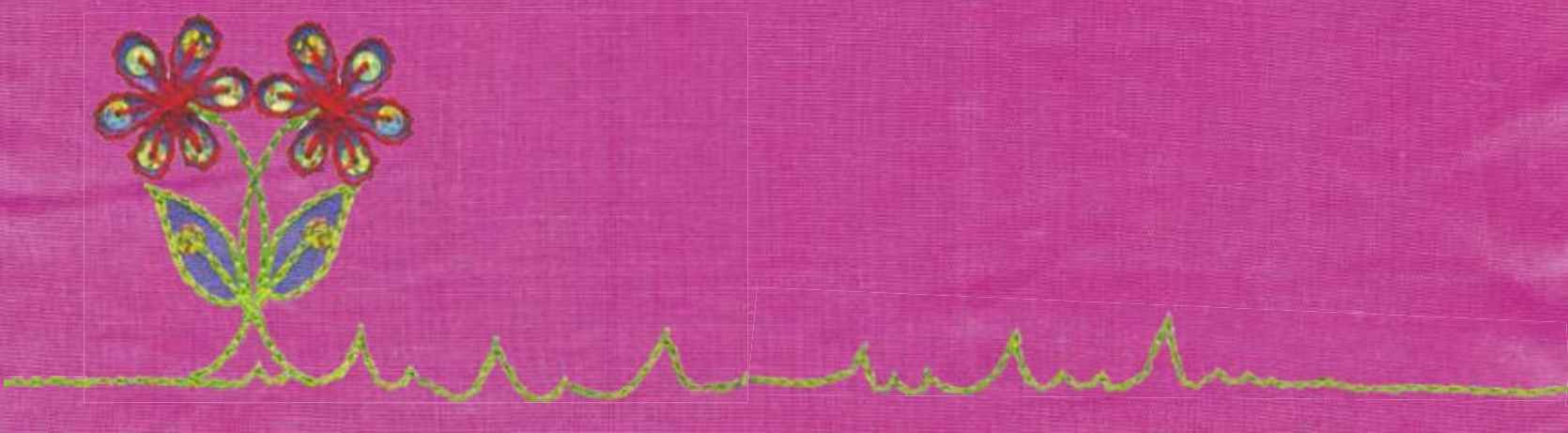

बारिश

सरस्वती नन्दिनी मजुम्दार
कला: रफिया बानो

एकलव्य का प्रकाशन
निर्माण, वाराणसी द्वारा विकसित

गर्मी है

बहुत गर्मी है

बादल आए !

हवा चलने लगी...

और बारिश शुरू हो गई

ज़ोरों से बारिश होने लगी

बाद्दल गरजे,
बिजली चमकी

हम बरसाती हवा में
सो रहे हैं।

बारिश

रफिया बानो

रफिया वाराणसी में रहने वाली एक युवा ज़रदोज़ कशीदाकार हैं। उनका परिवार पीढ़ियों से बुनकरी करता आया है। रफिया की उम्र कोई 28 साल की होगी। वे अपनी माँ का इकलौता सहारा हैं। अन्य कुटीर उद्योगों की तरह ही रफिया के काम की माँग भी घटती-बढ़ती रहती है। त्योहारों के दिनों में वे पौ फटने से शुरू करके शाम ढलने तक काम में लगी रहती हैं। पर साल के बाकी महीनों में उनके पास काम नहीं होता।

रफिया 1988 से निर्माण के साथ काम कर रही हैं। यहाँ उन्होंने कशीदाकारी से कपड़े की किताबें और दूसरे डिज़ाइनरों के साथ काम करते हुए बच्चों के लिए कई नई चीज़ें बनाई हैं। उनके परिवार के तीन बच्चे निर्माण द्वारा संचालित विद्याश्रम – द साउथपॉइंट स्कूल में पढ़ते हैं।

ज़रदोज़ी कला

ज़रदोज़ी बनारस (या वाराणसी) की एक विशेष कशीदाकारी है जिसमें सलमा-सितारे, मोतियों और सोने व चाँदी की ज़री का उपयोग होता है। ज़री को दिशा देने वाली सुई पतली, लम्बी और आगे से एक नुकीला हुक लिए हुए होती है।

पुराने ज़माने में अमीरों के कपड़े खाँटी सोने, चाँदी और काँच से सजे होते थे। मुगल साम्राज्य में प्रचलित फुलकारी या ज्यामितीय डिज़ाइनों में ज़री के धागों से बने आकार खूब दिख जाते थे। आज काँच के मोतियों की जगह प्लास्टिक ने ले ली है। कम्प्यूटरों पर बनी आधुनिक डिज़ाइनों ने पारम्परिक आकारों की जगह ले ली है। फिर भी रफिया बानो जैसे कशीदाकारों का काम पूरी दुनिया के शो-रूमों में प्रदर्शित होता है।

सरस्वती नन्दिनी मजुम्दार

नन्दिनी निर्माण में बच्चों, युवाओं और अध्येताओं के साथ शिक्षा व कला विषय में काम करती हैं। निर्माण (www.nirman.info) वाराणसी स्थित एक गैर-सरकारी संस्था है। बच्चों के लिए चन्द किताबों के अलावा नन्दिनी ने वाराणसी में पैदल घूमने पर भी एक किताब **Banaras: Walks Through India's Sacred City** लिखी है जो हाल में रोली बुक्स से प्रकाशित हुई है।

बारिश

सरस्वती नन्दिनी मजुम्दार
कलाः रफिया बानो
अँग्रेज़ी से अनुवादः टुलटुल विश्वास
अक्षरांकनः सीमा

निर्माण तथा एकलव्य
इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों से मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में निर्माण एवं एकलव्य का ज़िक्र करना और सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य एवं निर्माण से सम्पर्क करें।

जून 2014 / 3000 प्रतियाँ
मार्च 2018 / 3000 प्रतियाँ
अप्रैल 2016 / 3000 प्रतियाँ
अप्रैल 2019 / 3000 प्रतियाँ
फरवरी 2017 / 3000 प्रतियाँ
अक्तूबर 2019 / 3000 प्रतियाँ
पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
कागज़: 100 gsm मेपलिथो व 210 gsm पेपरबोर्ड (कवर)
ISBN: 978-93-81337-36-3
मूल्यः ₹ 35.00
यह किताब अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध है। ISBN: 978-93-81300-46-6 Price: ₹ 45.00

प्रकाशकः **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर
फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, जाटखेड़ी,
भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोनः +91 755 - 297 7770, 71, 72, 73
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल फोनः +91 755 268 7589

एक टाँका लगाओ, कुछ तुरपाई करो
और बादल उतर आएगा पहलू में।
धागे की एक लहर से खिंच आएगा
हवा का झोंका। सुई की एक चुभन से
बरस जाएँगे बादल। चलो भीग जाएँ...